17 अप्रैल 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 2 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दिल्ली में डॉ. भारिल्ल का उद्बोधन

दिल्ली : यहाँ घेवरा मोड स्थित अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में भगवान महावीर के जन्म कल्याणक एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के परिवर्तन दिवस (उपकार दिवस) के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट एवं श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 9 अप्रैल तक 11वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के अतिरिक्त स्थानीय विद्वानों में ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, डॉ. सुदीपकुमारजी, डॉ. वीरसागरजी, डॉ. अशोकजी गोयल, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ 600 से अधिक साधर्मियों को मिला।

शिविर में श्री महावीर जिनमंदिर में प्रतिदिन विधानों के क्रम में श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान, श्री चन्द्रप्रभ पंचकल्याणक विधान, श्री शांति-कुंथु-अरनाथ पंचकल्याणक विधान, श्री सीमंधरस्वामी पंचकल्याणक विधान, श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान एवं श्री महावीर पंचकल्याणक विधान किया गया।

आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन की बालिकाओं द्वारा प्रतिदिन प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री अजितप्रसाद वैभव जैन थे। सहआमंत्रणकर्त्ता श्री विमलकुमार जैन, श्री पृथ्वीचंद जैन, श्री नरेश जैन लुहाड़िया, श्री आदीश जैन, श्री वी.के. जैन विकासपुरी, श्री पी.के. जैन रुड़की, श्री सतीश जैन ठेकेदार ग्वालियर थे। विधानों के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री जयपाल जैन, श्री अनिल जैन, श्री अमित जैन (डीटीडीसी), श्री प्रमोद जैन अरविन्द जैन, श्री रणधीर सिंह जैन, श्री मुकेश जैन एवं श्रीमती रुक्मणी जैन आदि थे।

इस अवसर पर विद्या निकेतन में 12वीं कक्षा की 13 कन्याओं का दीक्षांत समारोह भी आयोजित हुआ, जिसमें शारीरिक अस्वस्थता होने पर भी डॉ. भारिल्ल ने प्रेरक दीक्षांत भाषण दिया।

सभी कार्यक्रमों का संयोजन ट्रस्ट के सहनिर्देशक पण्डित राकेशजी शास्त्री द्वारा किया गया। **- अजितप्रसाद जैन**

महावीर जयन्ती सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनांक 9 अप्रैल को प्रातः ध्वजारोहण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रकाशन मंत्री ब्र.यशपालजी जैन, कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं बापूनगर जैनसमाज के पदाधिकारी प्रो.नेमीचन्दजी जैन, श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाटनी व डॉ. आर.के. जैन आदि के करकमलों द्वारा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। सभी महानुभावों का तिलक लगाकर पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने स्वागत किया। इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के सभी छात्र व वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल के सभी सदस्य भी उपस्थित थे। इसके पश्चात् प्रभात फेरी निकाली गई।

जिनेन्द्र भक्ति एवं नृत्य-गान करते हुए रथयात्रा लालकोठी मन्दिर पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण एवं कलशाभिषेक हुआ। इसके पश्चात् रथयात्रा पार्श्वनाथ चैत्यालय पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण व कलशाभिषेक के पश्चात् आयाजित सभा में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला। इसके पश्चात् रथयात्रा जयपुर शहर की मुख्य रथयात्रा में सम्मिलित हुई।

- श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर, जौहरी बाजार में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा भगवान महावीर के जीवन एवं सिद्धांतों पर प्रासंगिक प्रवचन का लाभ मिला।

महिला मण्डल का विशेष कार्यक्रम

जयपुर : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में महावीर जयंती के पूर्व श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल, बापूनगर द्वारा दिनांक 7 अप्रैल को महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में भगवान महावीर के सिद्धांत पर आधारित भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें महिला मण्डल के सदस्यों द्वारा संगीतमय भक्ति-भजन के साथ बालक वर्धमान का जन्मोत्सव एवं विशिष्ट संवादों के माध्यम से रंगारंग प्रस्तुति दी गई।

हम सब इन सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारें और संस्कारी बनें, नई पीढी को कैसे संस्कारवान बनायें आदि विषयों के साथ आध्यात्मिक चर्चा द्वारा आत्मकल्याण का मार्ग प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में जयपुर समाज के अनेक महिला मण्डलों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुशीला जैन एवं श्रीमती ज्योति सेठी ने किया एवं मण्डल की सभी सदस्यों द्वारा कार्यक्रम की विशेष प्रस्तुति दी गई।

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

विज्ञान के इस धर्मवात्सल्य और नि:स्वार्थ सेवा से वे चारों ही प्राणी बहुत ही गद्‌गद् थे और पश्चाताप के आँसुओं से अपने पूर्वकृत पापों को धो-धोकर पवित्र हो रहे थे। अब अधिकांश समय उनका आत्मचिंतन और पंचपरमेष्ठी के स्मरण में ही बीतने लगा था। अत: अब उन्हें न जीवन का अनुराग था और न मरण का भय। वे दोनों अपने साथ अपनी पत्नियों को भी सन्मार्ग में लगा देखकर भारी प्रसन्न थे।

समाधिमरण की भावना मन में संजोये जीवन-मरण से संघर्ष कर मृत्युंजयी बनकर अत्यन्त साम्यभाव से आठ दिन के अन्तराल ही से अन्नू और अज्जू दोनों अपनी पत्नियों को अकेला छोड़कर दिवंगत हो गये।

वहाँ उपस्थित जनसमूह में से एक वृद्ध ने कहा -''अन्त भला सो सब भला। विज्ञान, विद्या और डॉक्टर दम्पत्ति के प्रयासों से उनका अन्तिम जीवन भी सुधर गया, मरण बहुत अच्छा हो गया और इलाज में भी कोई कसर नहीं रही; पर जो भूल जीवन में हो गई थी सो तो हो गई थी। उसका दुष्परिणाम भी उन्हें भोगना ही पड़ा, वरना अभी उनकी उम्र ही क्या थी, यदि सिगरेट और शराब की आदत न पड़ी होती तो वे असमय में बेमौत नहीं मरते। भगवान ! ऐसी भूल कभी कोई न करे।''

ऐसा कहते-कहते वह वृद्ध पुरुष अचेत हो जमीन पर गिर पड़ा। वह उसके वियोग को बर्दाश्त नहीं कर पाया; क्योंकि वह और कोई नहीं अज्जू का दादा ही था, जिसने उसे बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा और पढाया-लिखाया था और उसके सहारे ही वह अपने पुत्र-वियोग से हुए गहरे घाव को भर रहा था, जो पोते के वियोग से पुन: हरा-भरा हो गया और वही घाव उसकी मृत्यु का कारण बन गया।

संजू के हृदय में पिता के प्रति विद्रोही भावना पनपने के दो प्रमुख कारण थे। एक तो उसके पिता द्वारा उसको योग्य बनाने के लिये आवश्यकता से अधिक सावधानी और कठोर अनुशासन तथा दूसरा प्रबल कारण था उनका स्वयं का अत्यधिक महत्वाकांक्षी होना।

जहाँ एक ओर वे संजू के बिगड़ने के भय से उसे जेब खर्च भी बहुत ही कस-कस कर देते, वहीं दूसरी ओर अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए वे पैसे को पानी की तरह बहाया करते।

कम जेब खर्च मिलने के कारण संजू को अपनी मित्र-मंडली में हीन भावना का अनुभव होता था; क्योंकि उसकी तुलना में कम पैसे वाले राजू आदि मित्र भी उससे कहीं अधिक जेब खर्च पाते थे और दिल खोलकर खर्च किया करते थे।

वैसे देखा जाये तो संजू स्वभाव से इतना बुरा नहीं था, जितना वह परिस्थितियोंवश बदनाम हो गया था।

वह अपने पिता की स्वयं के प्रति पवित्र भावनाओं को भी पहचानता था और उनकी व्यक्तिगत कमजोरियों को भी जानता था। पर एक तो वह उनसे छोटे मुँह बड़ी बात करे कैसे ? और कहने की हिम्मत करे भी तो उसके कहने का उसके पिता पर कोई असर होने वाला नहीं था; क्योंकि वे तो उसे अभी भी नादान ही समझ रहे थे।

बेटा कितना भी बड़ा और समझदार क्यों न हो जावे, पर बाप के लिये तो सदैव बच्चा और अक्ल का कच्चा ही नजर आता है। बाप के सामने बेटा और पति के सामने पत्नी भी समझदारी की बात कर सकते हैं - यह बात सेठ सिद्धोमल की समझ के परे थी।

उन्होंने अपनी इसी सोच के कारण न संजू की कभी कोई बात सुनी और न अपनी पत्नी की सलाह पर ही कोई ध्यान दिया।

परिणामस्वरूप संजू के हृदय में पिता के प्रति विद्रोह की भावना पनप गई। अब उसे पिता की भली बातें भी बुरी लगने लगीं। मानसिक संतुलन बिगड़ जाने से उसकी सोचने की क्षमता भी घट गई। उसने अपने गम को भुलाने के लिए सुरा का सहारा लिया तो उसके सहचारी अन्य अनेक दुर्व्यसनों ने भी उसे घेर लिया।

परिस्थितियों के झंझावात में उलझने के कारण आवारा बने संजू को सौभाग्य से जब ज्ञान, विज्ञान और सुदर्शन जैसे व्यक्तियों का सत्समागम मिला तो वह अपनी भूल का अहसास करते हुए अपने दुष्कृत्य पर लज्जित तो हुआ ही, उसने पश्चाताप के आँसुओं से अपने पूर्वकृत पापों का प्रक्षालन भी कर डाला और भविष्य में ऐसी भूल कभी न करने का संकल्प भी कर लिया।

इसप्रकार जब उसके दिन फिरे तो उसे सन्मार्ग पर आते देर नहीं लगी और वह रहे–सहे दुर्व्यसनों को दूर करने के प्रयास मे लग गया। परिणामस्वरूप प्रौढता की सीढी पर पग रखते–रखते उसमें काफी समझ आ गई।

उधर उसके पिता भी सोच रहे थे कि विज्ञान के बताये गुरुमंत्र के अनुसार उसको सन्मार्ग पर लाने के लिए एक सर्वगुणसम्पन्न, सर्वांग सुन्दर कन्या से उसकी शीघ्र शादी कर दी जाये।

(क्रमशः)

आपका महत्वपूर्ण योगदान –

प्रशिक्षण पाने हेतु प्रशिक्षण शिविर में पधारें

यदि आप चाहते हैं कि –

– आपके नगर, मुहल्ले और घर में वीतराग–विज्ञान पाठशाला का संचालन हो।

– आपके बालक जैनदर्शन का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करें

तो उक्त शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर में स्वयं सम्मिलित हों, अपने परिजनों एवं बालकों को भी साथ लायें एवं प्रशिक्षण लेने हेतु अधिकतम लोगों को प्रेरित करें।

प्रशिक्षण शिविर के मुख्य आकर्षण

– सी.डी. के माध्यम से पू. गुरुदेवश्री के प्रवचन
– डॉ. भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रातःकाल
– पूरे 18 दिन तक ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रवचन व समागम
– दिन में चार बार समागत विद्वानों के प्रवचन
– वृहद् विद्वत्समागम
– प्रौढ एवं बाल शिक्षण कक्षायें
– प्रवेशिका प्रशिक्षण एवं बालबोध प्रशिक्षण कक्षायें
– प्रतिदिन सामूहिक जिनेन्द्र पूजन एवं भक्ति
– प्रतिदिन रोचक व ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम
– युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन
– स्नातक परिषद का सम्मेलन
– विद्वत्परिषद की कार्यशाला

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

ऑनलाइन संगोष्ठियाँ संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय द्वारा संचालित ऑनलाइन संगोष्ठियों के अन्तर्गत दिनांक 26 मार्च को आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय ध्रुवधाम बांसवाड़ा के आयोजकत्व में श्री समयसार ग्रन्थ के बंध अधिकार के आधार से 'बंध से निर्बन्ध' विषय पर 10वीं ऑन लाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर एवं मुख्य अतिथि पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट थे। विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. संजयजी शास्त्री परतापुर एवं पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा थे।

संगोष्ठी का शुभारंभ ध्रुवधाम के छात्र शिखर जैन (शास्त्री द्वितीयवर्ष) द्वारा मंगलाचरण से हुआ एवं स्वागत भाषण ध्रुवधाम संस्था के अध्यक्ष श्री महीपालजी ज्ञायक द्वारा प्रस्तुत किया गया। गोष्ठी में 16 विषय दिये गये थे, जिन पर 25 लेखों द्वारा प्रस्तुति दी गई। इसमें डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री द्वारा 8 लेख, श्री जे.पी. दोशी द्वारा 6 लेख, इंजी. संदीपजी जैन आत्मार्थी द्वारा 5, पण्डित शुभमजी शास्त्री द्वारा 3, पण्डित अखिलेशजी शास्त्री सागर द्वारा 1, श्री अभिषेकजी जैन द्वारा 1 एवं श्रीमती मालती जैन छिन्दवाड़ा द्वारा 1 लेख प्रस्तुत किया गया।

संगोष्ठी में लेखों एवं बंधाधिकार से संबंधित आये हुये प्रश्नों के समाधान विद्वानों द्वारा दिये गये।

संगोष्ठी का सफल संयोजन व संचालन डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री ने किया। सहयोगी के रूप में पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री 'ओजस्वी', पण्डित शुभमजी शास्त्री सिद्धायतन, श्री संदीपजी जैन आत्मार्थी एवं डॉ. सुरभि खण्डवा थे।

अन्त में आभार प्रदर्शन डॉ. प्रवीणजी एवं डॉ. अरविन्दजी भीलवाड़ा ने व्यक्त किया।

इसी प्रकार 11वीं ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 9 अप्रैल को पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली की अध्यक्षता में एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के मुख्य आतिथ्य में किया गया। संगोष्ठी का विषय भगवान महावीर की जन्म जयंती के अवसर पर प्रासंगिक 'भगवान महावीर का सर्वोदयी तीर्थ' था। जिसमें विशिष्ट वक्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित अमितजी शाह मुम्बई थे।

इस संगोष्ठी में भगवान महावीर से संबंधित 15 विषय दिये गये, जिन पर लगभग 25 लेख प्राप्त हुये।

संगोष्ठी का सफल संचालन डॉ. प्रवीणजी शास्त्री एवं इंजी.संदीपजी आत्मार्थी ने किया।

अन्त में आभार प्रदर्शन डॉ. अरविन्दजी भीलवाड़ा ने व्यक्त किया।

हार्दिक बधाई !

कोल्हापुर (महा.) निवासी श्री बापू जिनप्पा चौगुले ने अपने पुत्र द्वारा परीक्षा उत्तीर्ण करने पर जैनपथप्रदर्शक हेतु 251/– रुपये प्रदान किये। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

स्वर्ण जयंती के मायने (23)
तत्त्वप्रचार : वर्तमान चुनौतियाँ और उपाय

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

● साधन उपलब्ध करवाना –

यदि लोगों के बीच तत्त्वज्ञान की चाह ही न हो तो उपलब्ध साधन किसी काम नहीं आयेंगे, कुछ नहीं कर पायेंगे और चाह होने पर भी साधन ही न हों तब भी बात आगे नहीं बढेगी।

आज विडम्बना यह है कि selfcontain bedrooms के जमाने में जब लोग अपने अपरिहार्य नित्यकर्म के लिये भी अपने कमरे से बाहर निकलने को तैयार नहीं हैं, यह संभव नहीं है कि वे तत्त्वज्ञान पाने के लिये एक निर्धारित समय पर दूर-दूर स्थित जिनमंदिर या पाठशाला में जाएं।

आज लोगों को जो कुछ चाहिये वह अपने अत्यंत निकट सीमित दायरे में चाहिये और जब चाहिये तभी चाहिये।

आज उन्हें e-book चाहिये, audio book चाहिये, इनमें भार नहीं होता है, ये स्थान नहीं घेरते हैं, ये सदा लोगों के साथ रह सकते हैं।

यदि हम यह तत्त्वज्ञान उन्हें उनके bedroom में ही नहीं bed पर ही उपलब्ध नहीं करवा पाए, 24 घंटे उपलब्ध नहीं करवा पाये तो हमारे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के प्रयास भी प्रभावी नहीं होंगे।

उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए आज हमें संचार माध्यमों और social media के माध्यम से उन तक पहुंचना होगा। वे जिस formet में comfortable हैं उस formet में अपनी उपस्थिति दर्ज करवानी होगी। वह formate audio हो सकता है, audiovisual हो सकता है या फिर सिर्फ visual भी।

आज हमें इंटरनेट के माध्यम से youtube, ustreme, website आदि के माध्यम से और video conferencing के माध्यम से एक दूसरे से जुड़ना होगा।

मेरे उक्त कथन का आशय यह कदापि नहीं कि अब हमारे पारंपरिक तौर-तरीके और साधन किसी काम के ही नहीं। उनका भी अपना अलग महत्व है।

अंतत: तो हमें अपनी समान रुचि और विचारधारा वाले साधर्मी लोगों का समाज चाहिये ही चाहिये, प्रत्यक्ष मेलमिलाप व वार्तालाप का एक अलग ही महत्व है और वातावरण का भी, जो उपयुक्त स्थल पर ही मिल सकता है। इस सबके लिये अपने निवास के निकट ही जिनालय, पाठशाला, दैनिक सामूहिक पूजन व स्वाध्याय आदि गतिविधियों का संचालन भी अत्यंत आवश्यक व महत्वपूर्ण है। ज्ञानीजनों का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन भी चाहिये ही चाहिये।

इसप्रकार यदि हम अपने पारम्परिक साधनों और तौरतरीकों के साथ आधुनिक साधनों की संधि स्थापित कर पायें तो हम अपना तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का कार्य प्रभावशाली तरीके से कर पायेंगे।

● समय निकालना –

दो बातें परम सत्य हैं – एक तो यह कि प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह कोई भी क्यों न हो अपने पास समय की कमी की शिकायत करता हुआ पाया जाता है और दूसरी यह कि सभी के पास दिन में मात्र 24 घंटे ही होते हैं।

दुनिया का व्यस्ततम व्यक्ति भी आखिर अपने नित्यकर्मों के लिये समय जुटा ही लेता है न !

एक परम सत्य यह भी है कि **दुनिया में जितने भी महान काम किये गये हैं, वे सभी दिन के इन्हीं 24 घंटों के दरम्यान ही किये गये हैं, इसलिये कोई भी व्यक्ति किसी काम को न करने के लिये समय की कमी को दोषी ठहराये यह बेमानी है।**

महत्वपूर्ण बात यह है कि हम हमारे पास उपलब्ध समय का बंटवारा किसप्रकार करते हैं, हमारी प्राथमिकताएं क्या हैं ?

जो व्यक्ति जिस कार्य को आवश्यक मानता है, अपना समय उस काम में लगा देता है व अन्य कार्य गौण हो जाते हैं।

ज्ञानीजनों के संपर्क में आकर यह जानने के बाद कि **'सुख भौतिक वस्तुओं से प्राप्त होने वाली बाहरी वस्तु नहीं है वरन् अपने आत्मा में है व आत्मा के आश्रय से ही प्राप्त किया जा सकता है'** सुख का चाहक यह जीव स्वाध्याय को अपनी प्राथमिकता बना ले यह स्वाभाविक ही है।

जैसे भोगों का लोभी कोई भी व्यक्ति अन्य कार्य करता हुआ भी मात्र भोगों का ही चिन्तन करता है और अवकाश पाते ही भोग में रत हो जाता है, उसी प्रकार **आत्मार्थीजन अन्य कार्यों में प्रवृत्त रहते हुए भी मात्र आत्मचिन्तन में ही मग्न रहते हैं और अवसर पाते ही स्वाध्याय करने में जुट जाते हैं।**

इसप्रकार हम पाते हैं कि महत्वपूर्ण मात्र यही है कि उपयोगिता भासित हो।

जब-जब धार्मिक शिक्षण की चर्चा चलती है, एक शिकायत आम होती है कि हमारे पास और हमारे बालकों के पास समय नहीं है। हमारे बालक स्कूल, होमवर्क, ट्यूशन क्लास और खेलकूद, फिर इनके अलावा म्यूजिक क्लास, ड्राइंग व पेंटिंग क्लास आदि में इतने व्यस्त रहते हैं कि उनके पास पाठशाला जाने और धर्म पढने के लिये समय ही नहीं बचता है।

स्पष्ट है कि बालकों के धार्मिक शिक्षण व सात्विक संस्कार सिंचन का काम हमारी प्राथमिकता की लिस्ट में या तो है ही नहीं या बहुत नीचे है। अन्यथा उक्त सभी में से एक की या कुछ गतिविधियों की कटौती करके यह धार्मिक शिक्षण का कार्य आसानी से पूरा किया जा सकता है।

जिसप्रकार हम स्वयं सुखी होना चाहते हैं, उसी प्रकार अपने बालकों को भी तो सुखी होने और कल्याण के मार्ग पर लगाना चाहते हैं न ! तब भला कैसे हम उन्हें इस वीतरागी तत्त्वज्ञान से वंचित रखने का भयंकर अपराध कर सकते हैं ?

कुछ भी हो हमें स्वयं अपने लिये और अपने बालकों के लिये यह समय जुटाना ही होगा।

● भाषा की बाधा दूर करना –

हालांकि कोई भी भाषा विशेष हमारा साध्य नहीं है; पर वह अत्यंत महत्वपूर्ण साधन अवश्य है। पर यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। हम ऐसा करने में निपुण हैं। आखिर हम जिस कार्यक्षेत्र में जाते हैं, उसकी भाषा भी

सीखते और अपनाते ही हैं न !

कम्प्यूटर का उपयोग करने के लिये उसकी भाषा व शब्दावली सीखनी होती है और हम वह सीख ही लेते हैं न ! हम ही क्या छोटे–छोटे बालक भी आसानी से सीख लेते हैं।

''जहाँ चाह वहाँ राह''

इस क्षेत्र में हमें दो दिशाओं में काम करना होगा – उनकी भाषा में अपनी बात प्रस्तुत करने की और अपनी भाषा उन्हें सिखाने की।

प्रथम तो विषय के परिचय और प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायक विषय–वस्तु (साहित्य, audio-video आदि) हमें जनसामान्य की भाषा में (सभी प्रचलित भाषाओं में) ही उपलब्ध करवानी होगी; क्योंकि **जब तक विषय–वस्तु का परिचय ही प्राप्त नहीं होगा तब तक उसकी उपयोगिता भासित कैसे होगी, रूचि उत्पन्न कैसे होगी, कोई उस मार्ग में लगेगा कैसे ?**

यह कार्य बड़ा तो है पर असंभव नहीं।

इस कार्य के लिये आवश्यक है कि हमारे पास सभी भाषा भाषी ऐसे सक्षम विद्वान उपलब्ध हों जो जिनवाणी के मर्म को समझते हों, उसकी मूल भावना से परिचित हों और अपनी भाषा में उसे प्रभावशाली ढंग से व्यक्त कर सकें।

हमारा सौभाग्य है कि आज हमारे पास ऐसे विद्वान उपलब्ध हैं। मात्र व्यवस्था (coordinate) करने की आवश्यकता है। साधन जुटाने की।

दूसरा कार्य हमें यह करना होगा कि ऐसे गहरी रुचि वाले लोग जो सीधे आचार्यों की भाषा में उनके द्वारा प्रतिपादित मूल विषय–वस्तु का अध्ययन करना चाहते हैं पर भाषाज्ञान के अभाव में ऐसा नहीं कर पाते हैं। उन्हें आचार्यों की भाषा और कथनशैली से परिचित करवाने के साधन उपलब्ध करवाए जाएं।

आज विभिन्न माध्यमों से ये दोनों ही कार्य हो रहे हैं, अब आवश्यकता है इन्हें जन–जन तक पहुंचाने की।

● विषय प्रवेश –

जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है यह काम हमें उन बाहर खड़े हुए उन लोगों के लिये करना है जो अभी हमारे बने नहीं हैं, हममें शामिल नहीं हुए हैं। हमारी विषय–वस्तु से अपरिचित हैं।

उक्त सन्दर्भ में हमें दो कार्य करने हैं – पहला तो उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना है और दूसरा उन्हें विषय–वस्तु से परिचित करवाना है।

स्पष्ट है कि उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने के लिये हमें marketing technique का उपयोग भी करना होगा ताकि हम यह कार्य कम श्रम में प्रभावशाली ढंग से कर सकें। **इस अवस्था में मात्र product quality ही नहीं attrective packging भी आवश्यक है।**

जब वे आकर्षित होकर हमारी बात सुनने–समझने के मूड में आ जायें तब हमें अपनी विषय–वस्तु इसप्रकार सुगठित और आकर्षक शैली में, रुचि और जिज्ञासा उत्पन्न करने वाली शैली में, अनावश्यक विस्तार से बचते हुए इसप्रकार से प्रस्तुत करनी होगी कि वे ऊबकर इससे विमुख न हो जाएं।

अपने प्रत्येक प्रयास में उन्हें पर्याप्त उपयोगी ज्ञान मिलना चाहिये। ज्यों–ज्यों वे इसमें जुटते जाएं त्यों–त्यों उनमें तत्त्वज्ञान की भूख बढती जानी चाहिये।

एक बार आपके–हमारे संपर्क में आया व्यक्ति हमारा ही होकर रह जाए यह हमारी सफलता है और यदि वह फिर से विमुख हो जाये यह हमारी असफलता है।

● उच्च शिक्षण –

यह उनके लिये है जो अब हमारे लिये बाहरी नहीं रहे वरन् हमारे ही हो गये हैं। जिनमें आत्मकल्याण की भावना बलवती हो गयी है, जो अब इस मार्ग में आगे बढना चाहते हैं। ऐसे लोगों को अब आकर्षक पैकिंग नहीं content चाहिये, ठोस विषय–वस्तु चाहिये। आगमानुकूल एवं तर्कसंगत, व्यवस्थित और क्रमिक विकास से युक्त, सर्वांगीण। इन्हें निरंतरता चाहिये, समागम चाहिये।

ऐसे लोगों के लिये उनके घर के निकट ही प्रतिदिन देवदर्शन और सामूहिक स्वाध्याय की व्यवस्था होनी चाहिये। निरंतर विद्वत्जनों का समागम चाहिये, समय–समय पर विशिष्ट ज्ञानियों का समागम भी उपयोगी है।

अब ऐसे लोग हमारी टीम के ऐसे सदस्य भी बनने के पात्र भी हो जाते हैं, जो तत्त्वप्रचार में हमारे निकट सहयोगी हों और अन्य लोगों को इस मार्ग में लाने में हमारे सहायक हों। इस अवस्था में कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो कहें कि ''हमें औरों से क्या ? हमें तो आत्मकल्याण करना है।''

उन्हें इस तथ्य की ओर ध्यान देना चाहिये कि छठे गुणस्थानवर्ती संतों को भी इसप्रकार अन्य जीवों को सन्मार्ग पर लाने का विकल्प आता है और इसीलिये वे उपदेशादिक भी देते हैं और शास्त्रों की रचना भी करते हैं।

जरा विचार तो करें कि यदि एक दिन कोई हमारी अंगुली पकड़कर हमें इस मार्ग पर नहीं लाता तो आज हम कहाँ होते, क्या कर रहे होते ?

मोक्षमार्गियों में विद्यमान इसप्रकार के प्रशस्तराग का ही योगदान है कि अनादिकाल से आज तक तत्त्वप्रचार की यह महान परम्परा सतत् चल रही है और सदा चलती रहेगी।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रवचन सुनने हेतु –

प्रोजेक्टर/टीवी वितरण योजना

मुमुक्षु संस्थाओं द्वारा संचालित स्वाध्याय भवनों में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रवचनों को सुनने के लिये श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा प्रोजेक्टर/टीवी/लेपटॉप वितरण योजना प्रारम्भ की गई है, जिसके अन्तर्गत संस्था को प्राप्त आवेदनों पर निर्धारित नियमों व प्रक्रिया के पश्चात् आवश्यकतानुसार मुमुक्षु संस्थाओं को प्रोजेक्टर/टीवी/लेपटॉप प्रदान किये जायेंगे। **प्राप्ति हेतु संपर्क करें –** विराग शास्त्री (संयोजक) 9300642434 एवं श्री शैलेष भाई शाह मुम्बई 022–26130820 Email : info@vitragvani.com

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

24 से 28 अप्रैल	देवलाली–नासिक	गुरुदेवश्री जयन्ती
21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर
9 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
16 से 20 जुलाई	चैतन्यधाम–अहमदाबाद	गुरुमंथनवाणी शिविर
23 जुलाई से 1 अग.	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में आठवें अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं।

प्रश्न : व्याकरण न्याय शास्त्रादि भी जिनमत में पाये जाते हैं, उनका अध्ययन करना या नहीं ?

उत्तर : व्याकरण, न्याय शास्त्रों का अभ्यास होने पर अनुयोग रूप शास्त्रों का अभ्यास हो सकता है; अत: इनका भी अपनी बुद्धि के अनुसार थोड़ा-बहुत अभ्यास योग्य है।

यहाँ इतना है कि ये भी जैनशास्त्र हैं ऐसा जानकर इनके अभ्यास में बहुत नहीं लगना। यदि बहुत बुद्धि से इनका सहज जानना हो और इनको जानने से अपने रागादिक विकार बढते न जाने, तो इनका भी जानना होओ। अनुयोगशास्त्रवत् ये शास्त्र बहुत कार्यकारी नहीं हैं, इसलिये इनके अभ्यास का विशेष उद्यम करना योग्य नहीं है।

प्रश्न : प्रथमानुयोग में दोष कल्पना के प्रमुख बिन्दु उनके निराकरण सहित दीजिये।

उत्तर : शंका – प्रथमानुयोग में शृंगारादिक व संग्रामादिक का बहुत कथन करते हैं, उनके निमित्त से रागादिक बढ जाते हैं, इसलिये ऐसा कथन नहीं करना था व ऐसा कथन सुनना नहीं। **समाधान –** सरागी जीवों का मन केवल वैराग्यकथन में नहीं लगता। इसलिये जिसप्रकार बालक को बताशे के आश्रय से औषधि देते हैं, उसी प्रकार सरागी को भोगादि कथन के आश्रय से धर्म में रुचि कराते हैं। **शंका –** प्रथमानुयोग में अन्य जीवों की कहानियाँ हैं, उनसे अपना क्या प्रयोजन सधता है ? **समाधान –** जैसे कामी पुरुषों की कथा सुनने पर अपने को भी काम का प्रेम बढता है, उसी प्रकार धर्मात्मा पुरुषों की कथा सुनने पर अपने को धर्म की प्रीति विशेष होती है। इसलिये प्रथमानुयोग का अभ्यास करना योग्य है।

प्रश्न : करणानुयोग में दोष कल्पना के प्रमुख बिन्दु उनके निराकरण सहित दीजिये।

उत्तर : शंका – करणानुयोग में गुणस्थान, मार्गणादिक का व कर्मप्रकृतियों का कथन किया व त्रिलोकादिक का कथन किया; सो उन्हें जान लिया कि 'यह इसप्रकार है','यह इसप्रकार है' इसमें अपना कार्य क्या सिद्ध हुआ ? या तो भक्ति करें या व्रत-दानादि करें या आत्मानुभवन करें - इससे अपना भला हो। **समाधान –** परमेश्वर तो वीतराग हैं, भक्ति करने से प्रसन्न होकर कुछ करते नहीं हैं। भक्ति करने से कषाय मन्द होती है, उसका स्वयमेव उत्तम फल होता है। सो करणानुयोग के अभ्यास में उससे भी अधिक मन्द कषाय हो सकती है, इसलिये इसका फल अति उत्तम होता है। तथा व्रत-दानादिक तो कषाय घटाने के बाह्यनिमित्त के साधन हैं और करणानुयोग का अभ्यास करने पर वहाँ उपयोग लग जाये तब रागादिक दूर होते हैं सो यह अंतरंगनिमित्त का साधन है, इसलिये यह विशेष कार्यकारी है। **शंका –** करणानुयोग में कठिनता बहुत है, इसलिये उसके अभ्यास में खेद होता है। **समाधान –** यदि वस्तु शीघ्र जानने में आये तो वहाँ उपयोग उलझता नहीं है तथा जानी हुई वस्तु को बारम्बार जानने का उत्साह नहीं होता तब पाप कार्यों में उपयोग लग जाता है; इसलिये अपनी बुद्धि अनुसार कठिनता से भी जिसका अभ्यास होता जाने उसका अभ्यास करना।

प्रश्न : चरणानुयोग में दोष कल्पना के प्रमुख बिन्दु उनके निराकरण सहित दीजिये।

उत्तर : शंका – चरणानुयोग में बाह्य व्रतादि साधन का उपदेश है, सो इनसे कुछ सिद्धि नहीं है; अपने परिणाम निर्मल होना चाहिये, बाह्य में चाहे जैसे प्रवर्तो। **समाधान –** आत्मपरिणामों के और बाह्यप्रवृत्ति के निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है; क्योंकि छद्मस्थ के क्रियाएँ परिणामपूर्वक होती हैं, कदाचित् बिना परिणाम कोई क्रिया होती है, सो परवशता से होती है। अपने वश से उद्यमपूर्वक कार्य करें और कहें कि 'परिणाम इस रूप नहीं है', सो यह भ्रम है। अथवा बाह्य पदार्थ का आश्रय पाकर परिणाम हो सकते हैं; इसलिये परिणाम मिटाने के अर्थ बाह्य वस्तु का निषेध करना समयसारादि में कहा है। यदि बाह्य संयम से कुछ सिद्धि न हो तो सर्वार्थसिद्धिवासी देव सम्यग्दृष्टि बहुत ज्ञानी हैं, उनके तो चौथा गुणस्थान होता है और गृहस्थ श्रावक मनुष्यों के पंचम गुणस्थान होता है, सो क्या कारण है ? तथा तीर्थंकरादिक गृहस्थपद छोड़कर किसलिये संयम ग्रहण करें ? इसलिये यह नियम है कि बाह्य संयम-साधन बिना परिणाम निर्मल नहीं हो सकते, इसलिये बाह्य साधन का विधान जानने के लिये चरणानुयोग का अभ्यास अवश्य करना चाहिये।

प्रश्न : द्रव्यानुयोग में दोष कल्पना के प्रमुख बिन्दु उनके निराकरण सहित दीजिये।

उत्तर : शंका – द्रव्यानुयोग में व्रत-संयमादि व्यवहारधर्म का हीनपना प्रगट किया है। सम्यग्दृष्टि के विषय-भोगादिक को निर्जरा का कारण कहा है इत्यादि कथन सुनकर जीव स्वच्छन्द होकर पुण्य छोड़कर पाप में प्रवर्तेंगे, इसलिये इनका पढना-सुनना योग्य नहीं है। **समाधान –** जैसे गधा मिश्री खाकर मर जाये तो मनुष्य तो मिश्री खाना नहीं छोड़ेंगे, उसी प्रकार विपरीतबुद्धि अध्यात्मग्रन्थ सुनकर स्वच्छन्द हो जायें तो विवेकी तो अध्यात्मग्रन्थों का अभ्यास नहीं छोड़ेंगे। तथा अध्यात्म ग्रन्थों में भी स्वच्छन्द होने का जहाँ-तहाँ निषेध करते हैं, इसलिये जो भलीभांति उनको सुने वह तो स्वच्छन्द होता नहीं। यदि झूठे दोष की कल्पना करके अध्यात्मशास्त्रों को पढने-सुनने का निषेध करें तो मोक्षमार्ग का मूल उपदेश तो वहाँ है, उसका निषेध करने से तो मोक्षमार्ग का निषेध होता है। जैसे मेघवर्षा होने पर बहुत से जीवों का कल्याण होता है और किसी को उल्टा नुकसान हो तो उसकी मुख्यता करके मेघ का तो निषेध नहीं करना, उसी प्रकार सभा में अध्यात्म उपदेश होने पर बहुत से जीवों को मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है; परन्तु कोई उल्टा पाप में प्रवर्ते तो उसकी मुख्यता करके अध्यात्मशास्त्रों का तो निषेध नहीं करना।

अध्यात्म उपदेश न होने पर बहुत जीवों के मोक्षमार्ग की प्राप्ति का

अभाव होता है और इसमें बहुत जीवों का बहुत बुरा होता है; इसलिये अध्यात्म-उपदेश का निषेध नहीं करना। **शंका** – द्रव्यानुयोगरूप अध्यात्म-उपदेश है वह उत्कृष्ट है, सो उच्चदशा को प्राप्त हो उनको कार्यकारी है, निचली दशावालों को व्रत-संयमादिक का ही उपदेश देना योग्य है। **समाधान** – जिनमत में यह परिपाटी है कि पहले सम्यक्त्व होता है फिर व्रत होते हैं; वह सम्यक्त्व स्व-पर का श्रद्धान होने पर होता है और वह श्रद्धान द्रव्यानुयोग का अभ्यास करने पर होता है, इसलिये प्रथम द्रव्यानुयोग के अनुसार श्रद्धान करके सम्यग्दृष्टि हो, पश्चात् चरणानुयोग के अनुसार व्रतादिक धारण करके व्रती हो। इसप्रकार मुख्यरूप से तो निचली दशा में ही द्रव्यानुयोग कार्यकारी है। **शंका** – ऊँचे उपदेश का स्वरूप निचली दशावालों को भासित नहीं होता। **समाधान** – और तो अनेक प्रकार की चतुराई जानें और यहाँ मूर्खपना प्रकट करे, वह योग्य नहीं है। अभ्यास करने से स्वरूप भलीभांति भासित होता है, अपनी बुद्धि अनुसार थोड़ा-बहुत भासित हो; परन्तु सर्वथा निरुद्यमी होने का पोषण करें वह तो जिनमार्ग का द्वेषी होना है। **शंका** – यह काल निकृष्ट है, इसलिये उत्कृष्ट अध्यात्म-उपदेश की मुख्यता नहीं करना। **समाधान** – यह काल साक्षात् मोक्ष न होने की अपेक्षा निकृष्ट है, आत्मानुभवनादिक द्वारा सम्यक्त्वादिक होना इस काल में मना नहीं है; इसलिये आत्मानुभवनादिक के अर्थ द्रव्यानुयोग का अवश्य अभ्यास करना।

प्रश्न : चारों अनुयोगों में दिखाई देने वाले परस्पर विरोध का निराकरण कीजिये।

उत्तर : प्रथमादि अनुयोगों की आम्नाय के अनुसार यहाँ जिसप्रकार कथन किया हो, वहाँ उसप्रकार जान लेना, अन्य अनुयोग के कथन को अन्य अनुयोग के कथन से अन्यथा जानकर सन्देह नहीं करना। व्याख्यान जिस अपेक्षा सहित किये हों उस अपेक्षा से उनका अर्थ समझना। तथा जो उपदेश हो, उसे यथार्थ पहिचानकर जो अपने योग्य उपदेश हो उसे अंगीकार करना। जैसे वैद्यक शास्त्रों में अनेक औषधियाँ कही हैं, उनको जाने; परन्तु ग्रहण उन्हीं का करे जिनसे अपना रोग दूर हो। उसी प्रकार जैन शास्त्र में अनेक उपदेश हैं, उन्हें जाने; परन्तु ग्रहण उसी का करे जिनसे अपना विकार दूर हो जाये। अपने को जो विकार हो उसका निषेध करने वाले उपदेश को ग्रहण करे उसके पोषक उपदेश को ग्रहण न करे; यह उपदेश औरों को कार्यकारी है, ऐसा जाने।

उपदेश के अर्थ को जानकर वहाँ इतना विचार करना कि यह उपदेश किस प्रकार है, किस प्रयोजन सहित है, किस जीव को कार्यकारी है ? इत्यादि विचार करके उसका यथार्थ अर्थ ग्रहण करे। पश्चात् अपनी दशा देखे। जो उपदेश जिसप्रकार अपने को कार्यकारी हो उसे उसी प्रकार आप अंगीकार करे और जो उपदेश जानने योग्य ही हो तो उसे यथार्थ जान ले। इसप्रकार उपदेश के फल को प्राप्त करे।

शंका – जो तुच्छबुद्धि इतना विचार न कर सके वह क्या करे ?

समाधान – जैसे व्यापारी अपनी बुद्धि के अनुसार जिसमें समझे सो थोड़ा या बहुत व्यापार करे; परन्तु नफा-नुकसान का ज्ञान तो अवश्य होना चाहिये। उसी प्रकार विवेकी अपनी बुद्धि के अनुसार जिसमें समझे सो थोड़े या बहुत उपदेश को ग्रहण करे; परन्तु मुझे यह कार्यकारी है, यह कार्यकारी नहीं है - इतना तो ज्ञान अवश्य होना चाहिये। सो कार्य तो इतना है कि यथार्थ श्रद्धान-ज्ञान करके रागादि घटाना। सो यह कार्य अपना सिद्ध हो उसी उपदेश का प्रयोजन ग्रहण करे, विशेष ज्ञान न हो तो प्रयोजन को तो नहीं भूले, इतनी तो सावधानी अवश्य होना चाहिये। जिसमें अपने हित की हानि हो, उसप्रकार उपदेश का अर्थ समझना योग्य नहीं है।

प्रश्न : एक ही शास्त्र में परस्पर विरोध भासित हो तो वहाँ क्या करें?

उत्तर : करणानुयोग में जो कथन है वह तो तारतम्य सहित है और अन्य अनुयोग में कथन प्रयोजनानुसार है, इसलिये करणानुयोग का कथन तो जिसप्रकार किया है उसी प्रकार है, औरों के कथन की जैसे विधि मिले वैसे मिला लेना। **शंका** – परन्तु ऐसी विधि भी कहीं मिलती न दिखे, एक ही कथन परस्पर विरोधी दिखाई दे तो क्या करें ? **समाधान** – जहाँ विरोध भासित हो वहाँ इतना करना कि यह कथन करनेवाले बहुत प्रामाणिक हैं या यह कथन करनेवाले बहुत प्रामाणिक हैं; ऐसे विचार करके बड़े आचार्यादिकों का कहा हुआ कथन प्रमाण करना। जिनमत के बहुत शास्त्र हैं उनकी आम्नाय मिलाना। जो कथन परम्परा आम्नाय से मिलें उस कथन को प्रमाण करना। इसप्रकार विचार करने पर भी सत्य-असत्य का निर्णय न हो सके तो 'जैसे केवली को भासित हुए हैं वैसे प्रमाण हैं' ऐसा मान लेना; क्योंकि देवादिक का व तत्त्वों का निर्धार हुए बिना तो मोक्षमार्ग होता नहीं है। उसका तो निर्धार भी हो सकता है, इसलिये कोई उनका स्वरूप विरुद्ध कहे तो आपही को भासित हो जायेगा तथा अन्य कथन का निर्धार न हो या संशयादि रहें या अन्यथा भी जानपना हो जाये और केवली का कहा प्रमाण है - ऐसा श्रद्धान रहे तो मोक्षमार्ग में विघ्न नहीं है, ऐसा जानना।

प्रश्न : अनुयोगों का अभ्यास क्रम क्या है ?

उत्तर : प्रथमानुयोगादिक का अभ्यास करना, पहले इसका अभ्यास करना, फिर इसका करना ऐसा नियम नहीं है; परन्तु अपने परिणामों की अवस्था देखकर जिसके अभ्यास से अपनी धर्म में प्रवृत्ति हो उसी का अभ्यास करना।

– संयोजक, पीयूष शास्त्री

Ph.D. की उपाधि प्राप्त की

जयपुर (राज.) निवासी **श्रीमती ज्योति सेठी धर्मपत्नी श्री संजयजी सेठी** को जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा **'वचनिकाकार पण्डित जयचन्द छाबड़ा का दार्शनिक योगदान : एक अध्ययन'** विषय पर शोधकार्य हेतु पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपने अपना यह शोध कार्य डॉ. रजनीश भारद्वाज के निर्देशन में पूर्ण किया।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध छ: अध्यायों में विभक्त है, जिसमें तत्कालीन परिस्थितियाँ, जैन वचनिका साहित्य और प्रमुख जैन वचनिकाकारों का परिचय, पण्डित जयचन्द छाबड़ा का जीवनवृत्त एवं व्यक्तित्व, पण्डित जयचन्द छाबड़ा की रचनाओं का परिचयात्मक अनुशीलन, पण्डित जयचन्द छाबड़ा के साहित्य में प्रमेय मीमांस, प्रमाण मीमांसा और आचार मीमांसा का समावेश किया गया है।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं श्री नेमिनाथ दिग.जैन नया मंदिर ट्रस्ट और अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, खनियांधाना द्वारा आयोजित

51वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2017 से 7 जून 2017 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को बालबोध पाठमालायें एवं वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

(1) ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458; Email - ptstjaipur@yahoo.com
(2) श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, चेतनबाग, खनियांधाना, जिला-शिवपुरी 473990 (म.प्र.)
मोबाइल - 09575305898 (सोमिल शास्त्री), 09644122018 (आकाश शास्त्री)

वैराग्य समाचार

सहारनपुर (उ.प्र.) निवासी श्री श्रीचन्द्रजी जैन का दिनांक 28 जनवरी 2017 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

ग्रीष्मकाल के अवकाशों के सदुपयोग का सुनहरा अवसर

समयसारमय हो जग सारा

समयसार परमागम का पठन-पाठन देशभर में हो, इसके लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा 'समयसारमय हो जग सारा' नामक योजना प्रारम्भ की जा रही है।

इस योजना के अन्तर्गत जहाँ से आमंत्रण प्राप्त होंगे उन स्थानों पर 2 युवा विद्वानों की टीम भेजी जायेगी, जो वहाँ प्रात: समयसार विधान का आयोजन करेगी। सायंकाल सुविधानुसार पाठशाला/भक्ति/प्रवचन/सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। इस योजना में आसपास के स्नातकों एवं स्वाध्यायी विद्वानों का भी सहयोग लिया जायेगा।

आप भी अपने गाँव/शहर/मण्डल में 5 दिवसीय समयसार विधान का आयोजन करें। इसके लिये **आमंत्रण शीघ्र भेजें** - पीयूष जैन (संयोजक), समयसारमय हो जग सारा योजना, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 फोन-0141-2705581, 2707458, मो.-9785643202

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com